# देशी नस्ल (राठी) गाय का संरक्षण

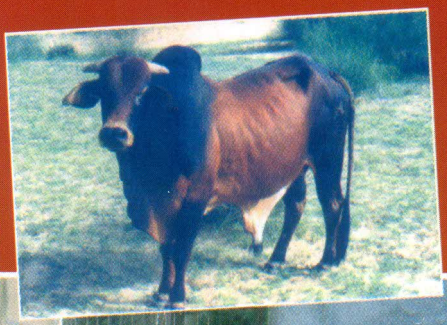

प्रो. ( डॉ. ) एस. सी. गोस्वामी
प्रमुख अन्वेषक

डॉ. अरूण कुमार झीरवाल

डॉ. मोहन लाल चौधरी

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

# पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र

## राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

इस नस्ल के पशु राजस्थान में उत्तर पश्चिम में स्थित थार रेगिस्तान में बीकानेर, गंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों में पाये जाते हैं। राठी राजस्थान की महत्वर्पूण प्रतिष्ठित विरासत है, जिसका उद्भव पीढी दर पीढी रेगिस्तान की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों को सहते हुए हुआ है। इस नस्ल में राजस्थान के सूखे क्षेत्र की विपरीत परिस्थितियों में अच्छा उत्पादन देने की जन्मजात क्षमता है। इस नस्ल का विकास साहीवाल, थारपारकर एवं रेड सिंधी नस्लों के मिश्रण से हुआ है।

## शारीरिक विशेषतायें

यह मध्यम आकर की अच्छे बनावट वाली होती है, माथा चपटा होता है, आँखे मोटी एवं चौड़ी होती हैं, कान छोटे एवं लटके हुए होते हैं शरीर का अग्र एवं पिछला भाग अच्छी तरह से विकसित होता है। इस नस्ल के बैल ताकतवर एवं कृषि कार्य तथा बोझा ढोने के लिए उत्तम होते हैं।

## उत्पादन विशेषतायें

पशुधन अनुसंधान केंद्र नोहर, हनुमानगढ़ में हुए अनुसंधान से पता चला हैं कि राठी गाय का पालन भी क्रॉस ब्रीड गाय के पालन के समान फायदेमंद है। इसका औसत एक ब्यांत का दूद्य उत्पादन 2000 लीटर एवं औसत दूध श्रवण काल 294 दिन, प्रथम ब्यांत की उम्र 40 माह और दो ब्यांत का अंतर 398 दिन होता है।

## राज्य में राठी गायों की जनसंख्या में कमी के करण :-

### 1. कृषि विधियों में परिवर्तन :-

कृषि कार्यो में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग तथा पारम्परिक पशुधन प्रबंधन तथा पशुपालन क्रियाओं के बारे में सीमित जानकारी के कारण कृषि कार्यों में पशुओ / मवेशियों का प्रयोग धीरे धीरे कम हो रहा है। इसका प्रभाव राठी नस्ल की जनसंख्या पर भी देखा जा सकता है।

### 2. तकनिकी में परिवर्तन :-

भारवाहक तथा परिवहन के साधन के रूप में मवेशियों की जगह वर्तमान में विभिन्न प्रकार की मशीनों ने ले ली है। संकर प्रजनन विधियों तथा कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रमों के प्रति लोंगों का बढता रूझान भी राठी नस्ल की गायों की संख्या में कमी का एक प्रमुख कारण है।

### 3. अर्थव्यवस्था में परिवर्तन :-

भारतीय अर्थव्यवस्था की पारम्परिक पशुधन उत्पादन प्रणाली पर घटती निर्भरता के कारण लोग देशी गायों के नस्लों के बजाय अधिक दूध देने वाली संकर गायों को रखना पसन्द कर रहें है। इसके कारण देशी गायों की नस्लों की जगह धीरे धीरे संकर तथा विदेशी गायें ले रही है।

### 4. आपदायें -

विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदायें जैसे सुखा, अकाल, बाढ आदि के कारण कई बहुमुल्य गायों की नस्ले कम हो रही है तथा साथ ही देशी नस्लों के संरक्षित क्षेत्रों की कमी एवं विभिन्न देशी नस्लों के आनुवांशिक लक्षणों के एक दूसरे से मिश्रित होने के कारण भी विभिन्न देशी गायों की नस्लें धीरे धीरे कम तथा लुप्त होने के कगार पर आ गई है। आमजन के द्वारा गायों की देशी नस्लों की सामाजिक आर्थिक तथा धार्मिक महत्व के प्रति उदासीनता की भावना के चलते भी राठी नस्ल की गायों की जनसंख्या घटती जा रही है।

## संरक्षण के लिए प्रमुख उपाय :-

नस्ल की वास्तविक स्थिति का आंकलन करने के बाद उसका संरक्षण मुख्यतः दो पद्धतियों से किया जाता है।

### 1. इन सीटू संरक्षण

इस पद्धति से गायों के संरक्षण के लिए विभिन्न प्रकार के प्रजनन फार्मो की स्थापना करके उनमें गायों का रख रखाव तथा प्रबन्धन किया जाता है। इस प्रकार के संरक्षण पद्धतियों की सफलता किसानों की सहभागिता पर निर्भर करती है तथा इसके लिए उन्हे सहयोग व प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए। इन सीटू संरक्षण विधि का महत्वपूर्ण फायदा यह है कि इसमें गायों में संरक्षण विधि के साथ – साथ उनका वर्ष दर वर्ष मुल्याकंन भी किया जा सकता है तथा इससे नस्ल की जनसंख्या की अनुवांशिक त्रुटियों का पता लगा कर उन्हे खत्म भी किया जा सकता है। इस पद्धति में गाय किसी भी तत्कालिक प्रयोग के लिए हर समय उपलब्ध रहती है तथा भविष्य में उपयोग के लिए वे एक जीन बैंक कि तरह कार्य करती है। संरक्षण की इस विधि का मुख्य दोष अधिक मात्रा में बुनियादी सुविधायें जैसे जमीन, आवास, आहार, जल आपूर्ति तथा तकनीकी श्रम शक्ति की आवश्यकता है।

### 2. एक्स सीटू (In - Vitro)

इस प्रकार की संरक्षण विधि में विभिन्न प्रकार की उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। जिसमें कम तापमान पर वीर्य का संरक्षण, अण्डों का संरक्षण, भ्रुण का संरक्षण, भ्रुणिय स्टेम कोशिकाओं का प्रयोग, भ्रुण प्रत्यार्पण तकनीकी का प्रयोग आदि शामिल है। इसके द्वारा पशुओं में किसी भी नस्ल को बिना किसी आनुवांशिक परिवर्तनों के संरक्षित किया जा सकता है। एक्स सीटू संरक्षण पद्धति सापेक्षिक रूप से अधिक आसान, अधिक किफायती और सुलभ है।

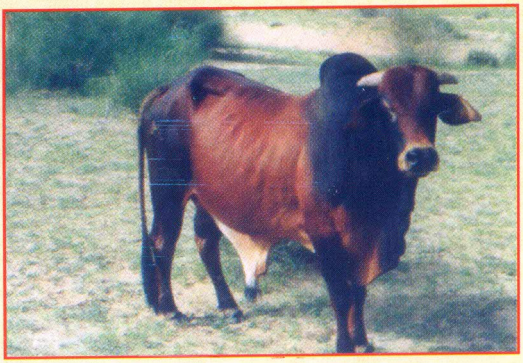

### सुझाव :-

1. राज्य में पाये जाने वाली राठी नस्ल की गायों के संरक्षण के लिए तथा पशुपालन को आम जन में और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए तत्काल ठोस कदम उठाये जाने की आवश्यकता है।
2. गायों की विभिन्न देशी नस्लों के अनुवांशिक सुधार के लिए उचित प्रजनन नीति बनानी चाहिए। इसके तहत नवीनतम जैव प्रोद्योगिकी

तकनीको जैसे भ्रुण प्रत्यारोपण तकनीक एवं मार्कर (चिन्हित) पद्धति का प्रयोग करके उन्नत किस्म के प्रजनन योग्य मवेशियों का चयन करना चाहिए, ताकि जल्द से जल्द उनका संवर्धन किया जा सके।

3. गायों की राठी नस्लों पर अधिक ध्यान देना चाहिए तथा उनके पाये जाने के स्थानो पर संकर प्रजनन के प्रयोगो को रोका जाना चाहिए।

4. अच्छी किस्म के प्रजनन योग्य राठी नस्ल के सांडों की उपलब्धता तथा कृत्रिम गर्भाधान पद्धति की सुविधा पशुपालको को देशी नस्लों के संरक्षण में मदद करेगी।

5. राठी नस्लों के प्रजनन क्षेत्र में तत्काल सर्वेक्षण करना चाहिए जिससे उनकी वर्तमान स्थिति, जनसंख्या, किसान की जरूरतों, प्रबंधन प्रणालियों भूमि एवं चारे की उपलब्धता के बारे में पता लगाया जा सके।

6. पशुपालको को पशुपालन के साथ साथ कई प्रकार की नवीनतम तकनीकों जैसे कम्पोस्ट खाद, वर्मी खाद तथा जैविक खाद आदि का मवेशियों के मल से निर्माण तथा मवेशियों के मुत्र पर आधारित कीटनाशक दवाईयों आदि के निर्माण के बारे में अवगत कराना चाहिए।

7. अकाल तथा सूखे के समय पशुपालको को पशुओं के संपूर्ण आहार के लिए सरकार के द्वारा सब्सिडी प्रदान की जानी चाहिए। जिससे वे अपने पशुओ को अकाल मौत से बचा सके।

8. मवेशियों को खिलाने के लिए कम पोषक तत्वों वाले मोटे चारे के स्थान पर अच्छे चारे तथा दाने का प्रयोग होना चाहिए तथा किसानों को

संतुलित आहार तथा कई प्रकार के नये आहार पद्धतियों के बारे में जागरूक करना चाहिए।

9. राज्य सरकार की देख रेख में एक सहकारी संस्था का निर्माण हो जिससे की पशुपालको के लिए उनके पशुओ तथा पशु उत्पादों के लिए खरीद तथा बिक्री के लिए उचित सुविधाये उपलब्ध कराई जा सकें।

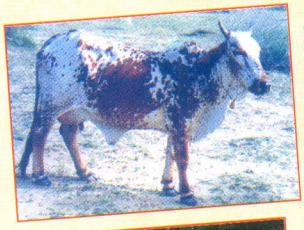

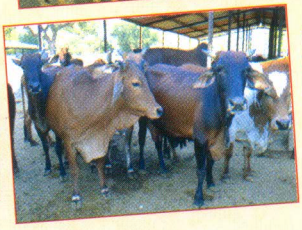

-: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :-

प्रो. ( डॉ. ) कर्नल ए. के. गहलोत
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,
बीकानेर

प्रो. ( डॉ. ) बी. के. बेनीवाल
अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय,
बीकानेर



-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. एस. सी. गोस्वामी
विभागाध्यक्ष
पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग,
सी.वी.ए.एस., बीकानेर

डॉ. अरूण कुमार झीरवाल
सहायक अन्वेषक
( 9461300587 )

डॉ. मोहनलाल चौधरी
सहायक अन्वेषक
( 9414603842 )



मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819